साप्ताहिक
Live not just breaTHE

दि कार्मिक पोस्ट

MPHIN/2015/63220
MP/IDC1528/22-23

Global School Of Excellence, Obedullaganj

वर्ष : 9, अंक : 2 | (प्रति बुधवार), इन्दौर, 30 अगस्त 2023 से 5 सितंबर 2023 | पेज : 8 | कीमत : 3 रुपये

यहां जानिए क्या 2023 एक सूखा वर्ष होगा?

नई दिल्ली। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने अगस्त, 2023 को आधिकारिक तौर पर पिछले 123 वर्षों का सबसे सूखा अगस्त घोषित किया है। मानसून के खत्म होने में अब सिर्फ सितंबर का महीना बाकी है। लेकिन सवाल उठ रहा है कि क्या 2023 का मानसून एक सूखा वर्ष होगा? मानसून फोरकास्टिंग को ध्यान में रखते हुए डाउन टू अर्थ (डीटीई) ने दो स्थितियों में अपनी गणना की है। पहली स्थिति में गणना यह बताती है कि सूखे की स्थिति को टालने के लिए सितंबर महीने में कितनी बारिश होनी चाहिए? वहीं दूसरी स्थिति में 2023 मानसून सीजन को सामान्य रहने के लिए सितंबर में कुल कितनी वर्षा की आवश्यकता है?

आईएमडी रिकॉर्ड्स के मुताबिक इस बार जून और अगस्त में वर्षा सामान्य से बेहद कम हुई है। मसलन , जून में सामान्य से -9 फीसदी और अगस्त में सामान्य से -36 फीसदी कम वर्षा रिकॉर्ड की गई है। इसकी भरपाई सितंबर में मुमकिन नहीं दिखाई दे रही, तो क्या हम सूखे की स्थिति में पहुंच जाएगे? आईएमडी के मुताबिक सितंबर महीने में सामान्य औसत वर्षा 167.9 मिलीमीटर (एमएम) है। पहली गणना के मुताबिक सूखे की स्थिति को टालने के लिए पूरे महीने कम से कम 92 फीसदी यानी 154.54 एमएम वर्षा होनी चाहिए। यदि 154.54 एमएम से कम वर्षा होती है तो 2023 को सूखे की स्थिति का सामना करना पड़ सकता है। मानसून सीजन में कुल औसत सामान्य वर्षा 868.6 एमएम है, जबकि इस सीजन के तीन महीनों में यानी जून से अगस्त तक कुल वर्षा 627.2 एमएम रिकॉर्ड की गई। यानी मानसून सीजन में सामान्य वर्षा के लिए सितंबर के सामान्य औसत वर्षा का कम से कम 123 फीसदी (206 एमएम वर्षा) की जरूरत है। 123 फीसदी से कम वर्षा होने पर इस सीजन को सामान्य से कम वर्षा करार दिया जाएगा। भारत मौसम विज्ञान विभाग ने सितंबर में बारिश %सामान्य% रहने का अनुमान लगाया है। हालांकि, यूनाइटेड किंगडम के रीडिंग विश्वविद्यालय के जलवायु वैज्ञानिक अक्षय देवरस के अनुसार, संभावनाएं धूमिल दिखती हैं। उनके अनुसार आगे सामान्य मानसूनी बारिश की संभावना कम है। भारत के पश्चिमी, दक्षिणी, दक्षिण मध्य और उत्तरी हिस्सों में सामान्य से कम बारिश होने की संभावना बढ़ गई है। सूखा वर्ष वह होता है जब मानसून की वर्षा 1971 से 2020 के दीर्घकालिक वर्षा औसत से 10 प्रतिशत कम होती है। पिछले 123 वर्षों में ऐसे 14 उदाहरण या वर्ष रहे हैं जब मानसून की वर्षा सामान्य की तुलना में 10 फीसदी से कम रही है।

इन 14 सूखे वर्षों में से 10 अल नीनो वर्ष भी थे। ऐसा माना जाता है कि अल नीनो सूखे को बढ़ाता है। 2023 भी एक अल नीनो वर्ष है। अल नीनो और ला नीना उष्णकटिबंधीय प्रशांत महासागर में आवर्ती जलवायु पैटर्न के गर्म चरण और ठंडे चरण हैं जिन्हें अल नीनो-दक्षिणी दोलन कहा जाता है। ला नीना का तीन साल का दौर 2023 में समाप्त हुआ और अल नीनो ने इसके आगमन की घोषणा की। डेटा के विश्लेषण से कोई सुसंगत पैटर्न नहीं पता चलता है, फिर भी सूखा वर्ष कहलाने से बचने के लिए 2023 में सितंबर में 154 मिलीमीटर से कुछ अधिक वर्षा या सामान्य वर्षा का 92 प्रतिशत की आवश्यकता होगी। आईएमडी ने कहा है कि मौसमी गतिविधियां फेवरेबल हैं जो वर्षा को सितंबर में बढ़ा सकती हैं। इनमें इंडियन ऑसियन डाइपोल (आईओडी) का सकारात्मक होना, मैडेन-जूलियन ऑसिलेशन (एमजेओ) का अनुकूल होना शामिल है।

लेकिन देवरस के अनुसार सामान्य मानसून की संभावना नहीं है। उन्होंने कहा, मुख्य रूप से पूर्वी भारत में केवल कुछ क्षेत्रों में सामान्य से अधिक बारिश होने की उम्मीद है, इसलिए बारिश का वितरण एक बार फिर से विषम होने की संभावना है। देवरस ने कहा कि एमजेओ से संभावित लाभ महीने में कुछ दिनों तक ही सीमित रहेगा। सितंबर के पहले सप्ताह में मॉनसून कम दबाव प्रणाली के विकास में दोलन की भूमिका निभाने की संभावना है, जिससे भारत के पूर्वी और मध्य भागों में बारिश होने की उम्मीद है। देवरस के मुताबिक सकारात्मक आईओडी आम तौर पर भारत के पश्चिमी तट के साथ-साथ पश्चिमी भागों में वर्षा को बढ़ाता है, लेकिन आईएमडी का लंबी दूरी का पूर्वानुमान इन क्षेत्रों में सामान्य से कम वर्षा की ओर इशारा कर रहा है। इसलिए सकारात्मक आईओडी से सितंबर 2023 के दौरान मानसून में मदद मिलने की संभावना नहीं है। लेकिन देवरस ने 2023 को बाहरी तौर पर सूखा वर्ष कहे जाने पर चेतावनी व्यक्त की। उन्होंने कहा, यह देखते हुए कि सितंबर की शुरुआत से लेकर मध्य सितंबर तक बारिश में कुछ सुधार होगा, हमें जून से सितंबर तक बारिश की कमी का सटीक अनुमान लगाने के लिए सितंबर के मध्य तक इंतजार करना होगा।

पृथ्वी की हर पांचवी प्रजाति का घर हैं विश्व धरोहर स्थल, जैवविविधता के संरक्षण में निभाते हैं अहम भूमिका

यह स्थल दुनिया की कुछ ऐसी प्रजातियों की रक्षा कर रहे हैं जो पृथ्वी पर केवल यही बची हैं।

मुंबई। दुनिया में विश्व धरोहर स्थलों को उनके सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व के लिए जाना जाता है, लेकिन साथ ही यह जैवविविधता के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इनके बारे में आईयूसीएन (इंटरनेशनल यूनियन फॉर कंजर्वेशन ऑफ नेचर) और यूनेस्को (संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन) द्वारा किए एक नए अध्ययन से पता चला है कि भले ही यह विश्व धरोहर स्थल, पृथ्वी के केवल एक फीसदी हिस्से पर मौजूद हैं, लेकिन वे दुनिया की 20 फीसदी से ज्यादा ज्ञात प्रजातियों का घर भी हैं।

पृथ्वी के सबसे महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व के स्थलों पर किए अपनी तरह के इस पहले सर्वेक्षण से पता चला है कि यह स्थल पौधों की 75,000 प्रजातियों और स्तनधारी जीवों के साथ-साथ पक्षियों, मछलियों, सरीसृपों और उभयचर जीवों की 30,000 से अधिक प्रजातियों को आश्रय प्रदान करते हैं। रिपोर्ट में यह भी सामने आया है कि इन यूनेस्को की इन वैश्विक धरोहरों में करीब 20,000 ऐसी प्रजातियां भी रह रही हैं, जिनपर विलुप्त होने का खतरा मंडरा रहा है। इनमें पेड़-पौधों की 18130 प्रजातियां, 593 स्तनधारी, 682 पक्षी, 615 मीठे पानी की मछलियां, 471 उभयचर और सरीसृपों की 400 प्रजातियां शामिल हैं। अध्ययन में शामिल यह 1,157 संरक्षित स्थल, जिनमें चीन की महान दीवार से लेकर ग्रेट बैरियर रीफ और भारत में पश्चिमी घाट जैसे प्राकृतिक स्थल शामिल हैं। विश्व के यह प्राकृतिक धरोहर स्थल कई अलग-अलग पारिस्थितिक तंत्रों को कवर करते हैं, जिनका कुल क्षेत्रफल 35 लाख वर्ग किलोमीटर, जो आकार में भारत से भी बड़ा है। इसी तरह यह धरोहर स्थल विशाल वन क्षेत्रों को भी संरक्षित रखते हैं जो करीब 6.9 करोड़ हेक्टेयर क्षेत्र में फैले हैं जो आकर में जर्मनी से करीब दोगुने हैं। यह जंगल भारी मात्रा में कार्बन डाइऑक्साइड को भी सोखते हैं। अनुमान है कि यह हर साल करीब 19 करोड़ टन कार्बन डाइऑक्साइड को सोख रहे हैं। यह स्थल दुनिया में बाकी बचे करीब एक तिहाई हाथी, बाघ और पांडा का घर हैं। इतना ही नहीं यह स्थल कम से कम 10 फीसदी ग्रेट ऐप, जिराफ, शेर और गैंडों को भी आश्रय देते हैं। इतना ही नहीं यह स्थल कुछ ऐसी प्रजातियों को भी आश्रय देते हैं जिनकी संख्या इतनी कम है कि उन्हें केवल उंगलियों पर गिना जा सकता है। उदाहरण के लिए वाक्विटा जो दुनिया में केवल 10 ही बची हैं उनकी पूरी आबादी ही इन धरोहर स्थलों में बाकी बची है। इसी तरह जावन गैंडा, जो दुनिया में केवल 60 हैं वो भी इन वैश्विक धरोहरों में ही संरक्षित हैं। वहीं गुलाबी इगुआना जिनकी संख्या केवल 200 है, वो भी इक्वाडोर के गैलापागोस आइलैंड पर ही जीवित हैं। कुछ ऐसा ही हाल सुमात्रन ओरंगुटान, माउंटेन गोरिल्ला, सुमात्रन गैंडों, दामा गजेल का भी है, जोकि दुनिया से करीब-करीब विलुप्त ही हो गया है।

दुनिया की अनोखी प्रजातियों का घर हैं यह धरोहर स्थल गौरतलब है कि यह जानकारी संकटग्रस्त प्रजातियों पर आईयूसीएन द्वारा जारी रेड लिस्ट के आंकड़ों पर आधारित है, जिसे आगामी दिसंबर में अपडेट किया आएगा। रिपोर्ट के मुताबिक इनमें से कुछ स्थल तो ऐसे हैं जो जैवविविधता के संरक्षण के दृष्टिकोण से बेहद अहम हैं। इनकी अहमियत इसी बात से समझी जा सकती है कि इनमें से 20 फीसदी स्थल दुनिया के प्रमुख जैव विविधता क्षेत्रों (केबीए) में स्थित हैं। रिपोर्ट के अनुसार यह स्थल कुछ ऐसी विरली प्रजातियों का घर हैं जो केवल यहीं पाई जाती हैं। उदाहरण के लिए दुनिया का सबसे ऊंचा पेड़ %हाइपरियन% जो की 115 मीटर ऊंचा है वो अमेरिका के रेडवुड नेशनल पार्क में मौजूद है। इसी तरह अर्जेंटीना का लॉस एलर्सेस नेशनल पार्क धरती के सबसे पुराने बचे पेड़ों में से एक अबुएलो का घर है, जो धरती पर करीब 2,600 साल पुराना है। ऐसा ही कुछ ऑस्ट्रेलिया की शार्क खाड़ी में है जो दुनिया की सबसे बड़ी समुद्री घास का घर है। यह पौधा 180 किलोमीटर में फैला है और 200 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र को कवर करता है। देखा जाए तो भले ही इन स्थलों को अच्छी तरह से संरक्षित किया जा रहा है, फिर भी जलवायु में आते बदलावों, कृषि क्षेत्रों में होते विस्तार के साथ-साथ अवैध शिकार, तेजी से होता निर्माण, संसाधनों का बेतहाशा होता दोहन और आक्रामक प्रजातियों के प्रसार जैसी इंसानी गतिविधियों के चलते अभी भी खतरे में हैं।

तापमान में हर एक डिग्री सेल्सियस की वृद्धि के साथ पहले के मुकाबले कहीं ज्यादा प्रजातियां खतरे में पड़ सकती हैं। ऐसे में यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि ये यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल और उनके आसपास के क्षेत्र हमारी वर्तमान जैव विविधता और जलवायु समस्याओं के समाधान में उपयोगी होने के लिए प्रभावी ढंग से संरक्षित हों।

जैव और सांस्कृतिक विविधता एक दूसरे से जुड़े हैं। जहां एक तरफ यह विश्व धरोहर स्थल मूल निवासियों और स्थानीय समुदायों को उनकी संस्कृति और धर्म से जुड़े स्थलों और संसाधनों की रक्षा करने में मदद करते हैं। वहीं यह स्थल रोजगार और आय भी पैदा करते हैं।

इतना ही नहीं यह स्थल प्रकृति और संस्कृति को जोड़ने के लिए पुल का काम करते हैं। यहां तक की शहरों में मौजूद सांस्कृतिक स्थल भी महत्वपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र हो सकते हैं, जो प्रकृति को होते नुकसान को रोकने में हमारी मदद कर सकते हैं। ऐसे में इन स्थलों को संरक्षित करने से लोगों को अनगिनत फायदे हो सकते हैं। यह न केवल इंसानों और जानवरों के बीच आपस में फैलने वाली बीमारियों को रोकना में मदद कर सकते हैं। साथ ही यह जंगलों और घास के मैदानों को ग्लोबल वार्मिंग की वजह बनने वाली हानिकारक गैसों को सोखने में भी मदद करते हैं। इनकी मदद से चरम मौसमी घटनाओं के कहर से बचा जा सकता है।

यह सही है कि इनको बचाने के लिए दुनिया भर में प्रयास किए गए हैं। 1972 की संधि ने भारत में काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान और नेपाल में चितवन राष्ट्रीय उद्यान जैसे महत्वपूर्ण स्थलों की रक्षा करने में मदद की है। जहां 1980 के बाद से इन पार्कों में एक सींग वाले गैंडों की संख्या दोगुनी होकर करीब 4,000 पर पहुंच गई है।

लेकिन साथ ही यूनेस्को ने यह भी कहा है कि हमें इन स्थलों की सुरक्षा के लिए और अधिक प्रयास करने होंगें, क्योंकि समय तेजी से बीत रहा है। तापमान में हर डिग्री की वृद्धि के साथ खतरा और बढ़ता जा रहा है। ऐसे में इन स्थलों की सुरक्षा के लिए जल्द से जल्द कार्रवाई करने की आवश्यकता है।

यूनेस्को ने जोर देकर कहा है कि चूंकि विश्व धरोहर स्थल, जैव विविधता के लिए भी बेहद महत्वपूर्ण हैं, ऐसे में देशों को उनकी सुरक्षा के लिए हर संभव प्रयास करने चाहिए। संयुक्त राष्ट्र एजेंसी ने देशों से प्रकृति की सुरक्षा के लिए अपनी योजनाओं में इन स्थलों को सर्वोच्च प्राथमिकता देने का आग्रह किया है।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने सेवा परमो धर्म वाहन रैली का किया स्वागत

भोपाल (एजेंसी)मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने लिंक रोड नं.1 पर स्थित बी-8, 74 बंगला पर करूणाधाम आश्रम की सेवा परमो धर्म वाहन रैली का स्वागत किया। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने करूणाधाम पीठाधीश्वर गुरूदेव सुदेश शांडिल्यजी महाराज का पुष्पहार पहनाकर और रैली पर पुष्पवर्षा कर स्वागत किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री चौहान की धर्मपत्नी श्रीमती साधना सिंह चौहान तथा बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित थे। उल्लेखनीय है कि नेहरू नगर स्थित करूणाधाम आश्रम में 27 से 29 अगस्त तीन दिन तक गुरूदेवालय स्थापना समारोह का भव्य आयोजन किया जा रहा है। बैरागढ़ के चंचल चौराहे से वाहन रैली शुरू हुई और भोपाल के विभिन्न मार्गों से होते हुए करूणाधाम आश्रम पहुंचेगी।

प्रदेश नगरीय विकास के क्षेत्र में नई ऊँचाइयाँ प्राप्त कर रहा है

भोपाल मेट्रो को सीहोर और मंडीदीप तक बढ़ाया जाएगा- मुख्यमंत्री श्री चौहान

भोपाल-इन्दौर में सितम्बर से आरंभ होंगे 14 हजार करोड़ की मेट्रो रेल के ट्रायल रन

स्मार्ट सिटीज में प्रदेश को बेस्ट अवार्ड, इन्दौर को नेशनल स्मार्ट सिटी अवार्ड तथा पाँच शहरों को मिले 13 अवार्ड

भोपाल (एजेंसी)मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि मध्यप्रदेश नगरीय विकास के क्षेत्र में नई ऊँचाइयाँ प्राप्त कर रहा है। इंडिया स्मार्ट सिटीज अवार्ड्स कॉन्टेस्ट-2022 में उत्कृष्ट कार्यों के आधार पर प्रदेश की पाँच स्मार्ट सिटी को विभिन्न श्रेणी में 13 अवार्ड मिले हैं। प्रदेश को बेस्ट स्टेट का अवार्ड मिला है और इन्दौर नेशनल स्मार्ट सिटी अवार्ड में प्रथम स्थान पर है।

प्रदेश में 2 हजार 792 अनाधिकृत कॉलोनियों को वैध किया जा रहा है, इससे 35 लाख लोगों को लाभ मिलेगा। इन उपलब्धियों के लिए प्रदेशवासियों को बधाई। आज का दिन एक संकल्प और सपना साकार होने का दिन है। नगरीय विकास की दिशा में आगे बढ़ते हुए भोपाल और इन्दौर में आज हम मेट्रो ट्रेन के संचालन की ओर अग्रसर हो रहे हैं। मुख्यमंत्री श्री चौहान श्यामला हिल्स स्थित स्मार्ट पार्क में मेट्रो ट्रेन के मॉडल कोच के अनावरण समारोह को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि मेट्रो ट्रेन केवल भोपाल शहर तक सीमित नहीं रहेगी। इसे भोपाल से मंडीदीप और फिर बैरागढ़ होते हुए सीहोर तक ले जाया जाएगा। मेट्रो ट्रेन का ट्रायल रन इन्दौर और भोपाल में सितम्बर माह में आरंभ हो जाएगा और अप्रैल-मई तक ट्रेन चलने लगेगी। अब भोपाल और इन्दौर मेट्रो रेल सिटी होंगे। मेट्रो ट्रेन से जनता को बहुत सुविधाएँ मिलेंगी। आवागमन का समय बचेगा और सफर भी आरामदायक होगा।

कोरोना की कठिन परिस्थितियों के बाद भी मेट्रो रेल के लिए तेजी से कार्य किया गया मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि मध्यप्रदेश बदल रहा है और तेजी से आगे बढ़ रहा है। हमारी पिछली सरकार ने भोपाल और इन्दौर को मेट्रो सिटी बनाने का निर्णय लेकर इस दिशा में काम भी शुरू कर दिया था, लेकिन दूसरी सरकार आने के कारण पंद्रह महीने काम बंद रहा। कोरोना की कठिन परिस्थितियों के बाद भी हमारी सरकार ने भोपाल और इन्दौर में मेट्रो रेल के लिए तेजी से कार्य किया। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर पौध-रोपण भी किया। कार्यक्रम में भोपाल की महापौर श्रीमती मालती राय, प्रमुख सचिव नगरीय विकास श्री नीरज मंडलोई, प्रबंध संचालक मध्यप्रदेश मेट्रो रेल कॉरपोरेशन श्री मनीष सिंह जन-प्रतिनिधि और गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

आमजन के अवलोकन के लिये खुला रहेगा मेट्रो ट्रेन कोच

स्मार्ट पार्क में मेट्रो ट्रेन कोच का वास्तविक मॉडल प्रदर्शित किया गया है। अनावरण के बाद मॉडल कोच को बच्चों एवं आमजन के अवलोकन के लिये खोला जायेगा। मेट्रो ट्रेन इस प्रकार के 3 कोच से मिल कर बनती है। भोपाल में 5 किलोमीटर एवं इंदौर में 6 किलोमीटर लम्बाई के मेट्रो ट्रॉयल रन की तैयारी तेजी से की जा रही है। भोपाल में मेट्रो की ऑरेंज एवं ब्लू लाइन निर्माणाधीन है, जिसकी कुल लम्बाई 31 किलोमीटर और लागत 7 हजार करोड़ रूपये है। ऑरेंज लाइन करोंद चौराहा से एम्स तक 17 किलोमीटर और ब्लू लाइन भदभदा चौराहा से रत्नागिरि चौराहा तक 14 किलोमीटर की लम्बाई की है। ऑरेंज लाइन का कार्य तेजी से चल रहा है। इंदौर मेट्रो में येलो लाइन निर्माणाधीन है। इसकी कुल लम्बाई 31 किलोमीटर एवं लागत 7500 करोड़ है। भोपाल-इंदौर मेट्रो को विश्व की अग्रणी तकनीक (ग्रेड ऑफ ऑटोमेशन-4) से संचालित करने के लिये डिजाइन किया गया है, जिसमें आर्टिफिशियल इंटेलीजेन्स का भी उपयोग किया गया है। इस तकनीक से मेट्रो की सेफ्टी सुनिश्चित करने तथा ऊर्जा संरक्षण में काफी फायदा होगा। प्रत्येक कोच में कुल 8 दरवाजे होंगे। मेट्रो ट्रेन में सीसीटीवी कैमरा प्रणाली, डिस्प्ले यूनिट, एयर कंडीशनिंग(ष्ट) सिस्टम, अत्याधुनिक प्रणाली की लाइटिंग व्यवस्था, आपातकालीन स्थिति में यात्रियों की चालक से बात हो सके, इसके लिए पेसेंजर इमरजेंसी कम्युनिकेशन यूनिट की व्यवस्था होगी।

नदी तलछट को प्रभावित कर रहा माइक्रोप्लास्टिक, बढ़ते कटाव की बन रहा वजह

नई दिल्ली। नदी तल पर बालू कैसे प्रवाहित होती है, माइक्रोप्लास्टिक्स उसे प्रभावित कर रहा है। रेत के प्रवाह में आने वाला यह बदलाव न केवल नदी में बढ़ते कटाव का कारण बन सकता है, साथ ही नदी के पारिस्थितिकी तंत्र को भी गंभीर तौर पर नुकसान पहुंचा सकता है। यह जानकारी अंतरराष्ट्रीय शोधकर्ताओं द्वारा नदियों में मौजूद माइक्रोप्लास्टिक्स पर किए अध्ययन में सामने आई है, जिसके नतीजे जर्नल नेचर कम्युनिकेशंस अर्थ एंड एनवायरनमेंट में प्रकाशित हुए हैं।

इस बारे में अध्ययन और पेन स्टेट यूनिवर्सिटी के सिविल और एनवायरनमेंट इंजीनियरिंग विभाग से जुड़े शोधकर्ता रॉबर्टो फर्नांडीज ने जानकारी दी है कि, नदियों में प्लास्टिक यूं ही नहीं तैरता है, वास्तव में यह सक्रिय रूप से तलछट के प्रवाह को प्रभावित करता है जो कटाव का कारण बनता है। जो वहां रहने वाले जीवों के आवास को प्रभावित करता है। डॉक्टर फर्नांडीज के मुताबिक, माइक्रोप्लास्टिक का घनत्व रेत की तुलना में कम होता है। यही वजह है कि यह पानी के अंदर कहीं ज्यादा गतिशील होता है। नदियों में प्राकृतिक प्रवाह से नदी तल पर लहरें और टीले बनते हैं, रेत की इन संरचनाओं को बेडफॉर्म कहा जाता है। आमतौर पर नदी तल के साथ रेत, कणों के रूप में नीचे की ओर प्रवाहित होती है। लेकिन जब माइक्रोप्लास्टिक्स उसमें मिलता है तो इनकी वजह से अचानक कटाव की घटनाएं बढ़ जाती हैं जो इन बेडफॉर्म को प्रभावित करती हैं और पानी में अधिक रेत ले जाती हैं। रिसर्च के मुताबिक प्लास्टिक में ऐसे गुण होते हैं, जो प्राकृतिक रूप से रेत के प्रवाह की तुलना में उसमें वृद्धि कर सकती है। ऐसे में नदी के कुछ क्षेत्रों में कहीं ज्यादा कटाव हो सकता है। यह भी पता चला है कि माइक्रोप्लास्टिक्स की वजह से रेत के कण नदी तल के पास धीरे-धीरे जाने के बजाय नदी तल से दूर ऊपर की ओर पानी में कहीं ज्यादा तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। वैश्विक स्तर पर प्लास्टिक प्रदूषण में होते इजाफे को देखते हुए शोधकर्ता फर्नांडीज का मानना है कि उनकी टीम ने माइक्रोप्लास्टिक्स और रेत के कणों के बीच जो परस्पर क्रिया देखी है वो शायद दुनिया भर में नदियों और खाड़ियां को प्रभावित कर रही हैं। उनके मुताबिक अध्ययन में जो निष्कर्ष सामने आए हैं वो केवल माइक्रोप्लास्टिक्स और रेत तक ही सीमित नहीं हैं। जहां भी कम घनत्व वाला इंसानी कचरा, प्राकृतिक तलछट के साथ संपर्क करता है, वहां इसी तरह की प्रक्रियाओं के घटित होने की संभावना बनी रहती है। हालांकि उनका यह भी कहना है कि वो बड़े पैमाने पर इसके परिणामों को लेकर निश्चित नहीं हैं, लेकिन इसके स्थानीय प्रभाव सामान रहने की आशंका है। प्लास्टिक के यह महीन कण दुनिया भर में पर्यावरण, स्वास्थ्य और जैवविविधता को बुरी तरह प्रभावित कर रहे हैं। जो आज करीब-करीब दुनिया के हर क्षेत्र को आपने आगोश में ले चुके हैं। गौरतलब है कि भारत में कावेरी नदी में मौजूद माइक्रोप्लास्टिक को लेकर किए एक अध्ययन से पता चला था कि यह और इस जैसे अन्य प्रदूषक मछलियों के कंकाल में विकृति पैदा कर रहे हैं। इतना ही नहीं नदी में बढ़ते प्लास्टिक प्रदूषण के चलते इनके विकास पर भी असर पड़ रहा है। अंतराष्ट्रीय ऐड एजेंसी टेअरफण्ड और पर्यावरण परामर्श संगठन रिसोर्स फ्यूचर द्वारा जारी रिपोर्ट के मुताबिक भारत सहित दुनिया भर में 21.8 करोड़ लोगों पर प्लास्टिक की वजह से बाढ़ का गंभीर खतरा मंडरा रहा है। यह वो प्लास्टिक है, जो ऐसे ही फेंकें जाने के कारण नालियों में जमा हो रहा है और ड्रेनेज सिस्टम को अवरुद्ध कर रहा है।

देखा जाए तो वातावरण में बढ़ता माइक्रोप्लास्टिक न केवल पर्यावरण बल्कि हमारे स्वास्थ्य के लिए भी गंभीर खतरा बन चुका है। ऐसे में इससे बचने के लिए तत्काल कार्रवाई करने की जरूरत है।

देखा जाए तो आज दुनिया में बढ़ता कचरा एक बड़ी समस्या बन चुका है। ओईसीडी द्वारा जारी एक नई रिपोर्ट से पता चला है कि अगले 37 सालों में प्लास्टिक कचरे की मात्रा तीन गुणा बढ़ जाएगी। रिपोर्ट की मानें तो 2060 तक हर साल करीब 100 करोड़ टन से ज्यादा प्लास्टिक कचरा पैदा होगा, जिसमें से करीब 15.3 करोड़ टन कचरे को बिना उपचार के ऐसे ही पर्यावरण में डंप कर दिया जाएगा, जो आगे चलकर गंभीर समस्याएं पैदा कर सकता है।

सीएम हेल्पलाइन प्रकरणों के निराकरण में इस माह भी इंदौर जिला टॉप फाइव में शामिल

इंदौर इंदौर में नशे की प्रवृत्ति पर प्रभावी अंकुश लगाने के लिये जागरूकता, जानकारी संकलन और प्रभावी कार्यवाही के लिये अभियान चलाया जायेगा। इंदौर इस माह भी सीएम हेल्पलाइन प्रकरणों के निराकरण में प्रदेश के टॉप फाइव जिलों में शामिल है। इंदौर जिला लगातार तीन माह से टॉप फाइव में आ रहा है। अगला लक्ष्य जिलों को पूरे प्रदेश में अव्वल बनाने का है। जिले में शासकीय स्कूलों की एक हजार कक्षाओं को स्मार्ट बनाने का अभियान भी प्रारंभ किया जा रहा है।

यह जानकारी आज यहां कलेक्टर डॉ. इलैयाराजा टी की अध्यक्षता में संपन्न हुई समय-सीमा के पत्रों के निराकरण (टी.एल.) बैठक में दी गई। बैठक में जिला पंचायत की मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्रीमती वंदना शर्मा, अपर कलेक्टर श्रीमती सपना लोवंशी, श्री रोशन राय तथा श्री राजेन्द्र रघुवंशी सहित अन्य अधिकारी मौजूद थे। बैठक में कलेक्टर डॉ. इलैयाराजा टी ने निर्देश दिये कि सभी अधिकारी मिलकर अपने-अपने स्तर पर नशाखोरी से समाज को पूरी तरह मुक्त करायें। स्कूल, कॉलेजों तथा आस-पास विशेष ध्यान दें। बस्तियों पर भी विशेष ध्यान दिया जाये। जिले में नशे की प्रवृत्ति पर अंकुश लगाने के लिये सभी मिलकर जागरूकता, जानकारी संकलन और कार्यवाही के लिये अभियान चलायें। उन्होंने बताया कि सभी अधिकारियों को एक-एक कॉलेज की जवाबदारी दी जायेगी। यह अधिकारी कॉलेजों में पहुंचकर नशाखोरी के विरूद्ध वातावरण निर्माण करेंगे। साथ ही वे कॉलेजों के प्रोफेसरों और विद्यार्थियों से मिलकर नशे के संबंध में जानकारी संकलित कर प्रस्तुत करेंगे। अधिकारियों का दल भी बनाया जायेगा। इस दल में एनजीओ भी शामिल रहेंगे। उन्होंने आबकारी विभाग के अमले और सभी एसडीएम को निर्देश दिये कि वे पुलिस के साथ मिलकर प्रभावी कार्यवाही सुनिश्चित करें। क्षेत्र का नियमित रूप से सघन भ्रमण कर निगरानी रखें। उन्होंने विद्यार्थियों को खेल गतिविधियों से जोड़ने के निर्देश भी दिये। साथ ही उन्होंने बताया कि सीसीटीवी केमरों की संख्या बढ़ाकर निगरानी व्यवस्था और पुख्ता बनाया जायेगा। बैठक में कलेक्टर डॉ. इलैयाराजा टी ने बताया कि इंदौर जिले में शासकीय स्कूलों की एक हजार कक्षाओं को स्मार्ट बनाने का अभियान प्रारंभ किया जायेगा। इस अभियान में उन्होंने अधिकारियों को पूर्ण सहयोग देने के निर्देश भी दिये। उन्होंने बताया कि जनसहयोग से सरकारी स्कूलों की दशा और दिशा सुधारने का बढ़ा कार्य हाथ में लिया जा रहा है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सोनल मेहता केलिए प्रतीक्षा ग्राफिक्स, 127 देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं 209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादकः डॉ. सोनल मेहता फोन : 0731-2595008 Mail.sonal12mehta@yahoo.co.in 9755040008